Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-382-385

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 382-385

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

1. रेशमी कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

2. प्रो. सतीश कुमार राय
शोध-निर्देशक,
वि. वि. हिन्दी विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :
रेशमी कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया.

कहानीकार चन्द्रकिशोर जायसवाल

चन्द्रकिशोर जायसवाल (15 फरवरी, 1940) हिन्दी के समकालीन कथाकारों में अग्रगण्य हैं। कथा - साहित्य के अतिरिक्त नाट्य - लेखन के क्षेत्र में भी उनका सार्थक अंशदान रहा है। उनके 11 कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं, जिनके शीर्षक हैं–'मैं नहिं माखन खायो', 'मर गया दीपनाथ', 'हिंगवा घाट में पानी रे', 'जंग', 'नकबेसर कागा ले भागा', 'दुखिया दास कबीर', 'किताब में लिखा है', 'आघातपुष्प', 'तर्पण', 'जमीन', 'खट्टे नहीं अंगूर', 'हम आजाद हो गए', इसके साथ ही प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह 'प्रतिनिधि कहानियाँ' शीर्षक से प्रकाशित है। उनकी कहानियों पर टिप्पणी करते हुए कथाकार शिवमूर्ति ने लिखा है- "हिन्दी कहानी की दुनिया में चन्द्रकिशोर जायसवाल का स्थान बहुत ऊँचा है। समाज के तलछट में जी रहे लोगों की जिन्दगी जितने सहज, स्वाभाविक और प्रामाणिकरूप में आती है, वह विस्मय पैदा करती है। इसमें मजदूर, किसान, बच्चे, हिन्दु मुस्लमान, अमीर – गरीब, चोर - उचक्कों से लेकर रनिया भिखमंगिन तक की दुनिया समाई हुई है। कुछ हद तक इसे 'अंडरवर्ल्ड' कह सकते हैं जो तथाकथित भद्र समाज की नजर से ओझल रहती है।"[1]

इनकी कहानियों में कहानीपन है। कथ्य का वैविध्य है और गहरी रोचकता भी। धर्मयुग में छपी उनकी कहानी- 'हुज्जत–कठहुज्जत' ने पाठकों को उनकी ओर उन्मुख किया और नवोदित कहानीकार भी उनसे प्रभावित हुए। यह कहानी निम्न मध्य वित्तीय परिवार के संघर्ष और यथार्थ को पूरी तीव्रता से रेखांकित करती है। इनमें फेरीवाले युवक और उनकी पत्नी की प्रकृति को व्यंजित किया गया है। फेरीवाले की पत्नी अपने पति के साथ अलग गृहस्थी चाहती है। वह आए दिन घर में विवाद पैदा करती है। अंततः उसके सूसुर खुद उससे विनती के स्वर में कहते हैं कि वह अपने पति के साथ अलग पकाएँ-खाएँ। बाजारवाद के दौर में छिंजते संबंधों का यथार्थ चित्रण करती है यह कहानी। यह कहानी अपनी सटीक संवाद योजना और समूचित रचाव के कारण अपने समय में काफी चर्चा में रही। इस कहानी को पढ़ने के बाद शिवमूर्ति इससे अभिभूत होते हैं कि वे जायसवाल जी की संपूर्ण कहानियों को

पढ़ जाना चाहते हैं। स्वयं उन्हीं की स्वीकारोक्ति है- "फिर तो खोज खोजकर चन्द्रकिशोर जी की कहानियाँ पढ़ने लगा। एक से एक नायाब कथानक वाली कहानियों- 'मर गया दीपनाथ', 'आधातपुष्प', 'हिंगबा-घाट में पानी', 'विसनपुर', 'प्रेतस्य', 'नकबेसर कागा ले भागा', 'दुखिया दास कबीर', 'चोर', 'जंग' आदि-आदि जितनी कहानियां उतने विषय। मसलन 'धर्मयुग' में ही छपी उनकी एक और कहानी 'नकबेसर कागा ले भागा' को देखे। क्या जकड़ लेने वाला शीर्षक है। यह दो अधेड़ भिखारियों और एक युवा भिखारिन की प्रेम-त्रिकोण की कथा है। भिखारिन पर अपना प्रभाव ज़माने के लिए वे कितनी जतन करते हैं, एक-दूसरे को मात देने के लिए वे कैसे पैतरे बदलते हैं, यह देखते ही बनता है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण के कितने कोण हो सकते हैं और इस आकर्षण में बंधा आदमी कहाँ तक जा सकता है, इसे बताने वाली दूसरी कोई कहानी मुझे आज तक पढ़ने को नहीं मिली। इसी तरह 'मर गया दीपनाथ' कहानी में चंद्रकिशोर जी साम्प्रदायिकता की समस्या और व्यक्ति पर उसके प्रभाव को जिस सूक्ष्मता से दर्ज करते हैं उसे एक बार पढ़ लेने के बाद भूल पाना संभव नहीं है।"[2]

इनकी एक अत्यंत प्रसिद्ध कहानी है 'नकबेसर कागा ले भागा' इस कहानी का मुख्य पात्र घेघु एक भिखारी है। कहानीकार ने उसका अत्यंत सजीव चरित्रांकन किया है। महानगर और नगरों में विकसित हो रहे भिखारियों के आश्रय स्थल के यथार्थ चित्रण से इस कहानी की शुरुआत होती है-"घेघु एक का भिखमंगे नाम है। बड़ा-सा घेघा है उसके पास। यों तो शहर में उनके कितने ही छोटे-मोटे पड़ाव है पर शहर के छोर पर भिखमंगों ने अपनी एक छोटी-सी बस्ती ही बना डाली है। कुछ घास – फूस, कागज और तिन के टुकड़ों की बनी झोपड़ियाँ हैं, जो गुफाओं की शक्लें अख्तियार किए हुए है। जिनके झोपड़ियाँ नहीं उन्होंने सामने खड़ी वृक्षों की छतनारों में अपने आश्रम बना लिए हैं और उनके घरों में अपने झोले और गूदड़ लटकाने के लिए कीले गाड़ दी हैं। रेलवे स्टेशन के बहुत करीब है यह जगह। इतनी करीब कि लूले-लँगड़े भी मसखरे की चाल में चलकर स्टेशन पर रुकी गाड़ी पकड़ ले। जब भी कोई गाड़ी रुकेगी, दो-चार उतरकर बस्ती की ओर जाते दिखाई पड़ जाएँगे और दो-चार गाड़ी में चढ़ने के लिए के लिए बस्ती की ओर से लपककर आते हुए।"[3]

घेघु अपने साथ एक किशोर भिखमंगे को रखता है, वह उसे चाचा कहता है। घेघु की इच्छा विवाह करने की होती है वह अपने भतीजे से अपनी इच्छा बताता है। वह रनिया से प्रेम करता है। वह एक ज्योतिष से अपना हाथ दिखाता है। ज्योतिषी उसे विश्वास दिलाता है कि उसका विवाह होगा। वह अपने भतीजा छोटू से रनिया के पास नकबेसर भेजता है, वह नकबेसर लौटाते हुए कहती है कि वह घेघु से विवाह नहीं कर सकती क्योंकि उसके घेघा से उसे डर लगता है। नकबेसर लेकर छोटू लौटता है- "नकबेसर आगे बढ़ाते हुए छोटू ने कहा, "भगवान जो करता है, वह अच्छा ही करता है।

रनिया तो बदमाश है चाचा, हर-हमेशा तो कंधी - चोटी में लगी रहती है। वह दस घरों का झूठन खानेवाली है। तुम्हारे एक घर से भला उसका गुजारा कैसे हो। बस यही समझो चाचा की भगवान ने तुम्हें बचा लिया। वह सुख-दुख में कभी काम नहीं आती।"

घेघु गुमसुम सुनता रहा। उसका ध्यान उन असंख्य औरतों की और चला गया था, जो हाट - बाजार में उसे देखकर भय और जुगुप्सा से भर उठती थी, और कानी भी तो है। सुबह-सुबह उठकर उसकी कानी आँखे देखेंगे, इतना भी नहीं जानते हो कि इससे अशुभ होता है।"[4]

कहानी का अंत कितना मार्मिक है और मनोविश्लेषणपूर्ण भी। नकबेसर की वापसी घेघु के अरमानों की वापसी है। उसकी हार्दिकता पर प्रहार है और उसके सपने की मौत भी। "मुट्ठी में उस वक्त केवल नन्हा सा नकबेसर ही बन्द था, न जाने और ढेर सी कितनी सारी चीजे थी, जो अचानक बन्द मुट्ठी में प्रवेश प् गई थी, और घेघु ने जिस ताकत और तेजी से अपना हाथ उछाला था, उससे तो यही लगता था कि वे सब-की-सब तालाब और झाड़ियों से दूर बहुत दूर जाकर गिरी होगी। झोपडी के दरवाजे पर वह एक क्षण के

लिए ठिठक गया, चाँद की रोशनी में उसकी दृष्टि अचानक अपनी खुली हथेली की ओर चली गई। किधर थी भाग्य की रेखा, घर-दुआर की एक लम्बी उम्र के सिवा और कुछ नहीं था उन रेखाओं में।"[5]

यह कहानी मानवीय संवेदना और लोक-विश्वास को रेखांकित करने वाली कहानी है। अकिंचन, विकलांग और उपेक्षित जन के पास भी सपने होते हैं; आकांक्षाएं होती हैं। अपने सपने की नोक पर उन्हें भी उतनी ही व्यथा होती है। यह कहानी अपने गहरे यथार्थ-बोध के कारण आकृष्ट करती है वही अपनी सटीक संवाद - योजना के कारण भी।

'मर गया दीपनाथ' जायसवाल जी की लम्बी कहानी है। 70 पृष्ठों की इस कहानी में सांप्रदायिक उन्माद और सांप्रदायिक सद्भाव का यथार्थ चित्रण हुआ है। कहानी के प्रारम्भ में दीपनाथ साईकिल मिस्त्री की दुकान में जाता है। वह दुकान मुसलमानों की बस्ती में है। अचानक कसबे में दंगा फैल जाता है। लोग भागने लगते हैं। कहानीकार ने इसका चित्रण करते हुए लिखा है- "अचानक पूरी बस्ती में हंगामा मच गया था। लोग भाग - दौड करने लगे थे। दंगे की खबर घर-घर नाच रही थी; और भी न जाने कैसी-कैसी खबरों की हवा उड़ी थी, उड़ाई गई थी। लोग घरों से निकलकर बाहरे आ रहे थे, औरत, मर्द, बच्चे, बूढ़े, बीमार सबके हाथ में हथियार थे। बच्चे बीमार तक हथियारबन्द। मुसलमानों की बस्ती में हथियार का ऐसा जखीरा होता है, इसकी तो कभी कल्पना भी नहीं की थी उसने। हर घर हथियारघर। मुहर्रम के समय मुसलमानों के अस्त्र-शस्त्र देखने का मौका उसे कितनी ही बार मिला था मगर एक साथ इतने हथियार उसने कभी नहीं देखे थे। और फिर ऐसे-ऐसे हथियार। तलवारे ही क्या एक किस्म की वह औरंगजेब की जंबिया और वह कोटा तलवार...भाले...फरसे...।"[6]

इस कहानी में दीपनाथ का एक प्रामाणिक मनोविश्लेषण किया गया है। शेख साहब सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक हैं। दंगों का प्रतिवाद वे इस तरह करते हैं- "शेख साहब कुछ श्रांत -शिथिल पड़ गए थे। ढीले हाथ में नंगी तलवार लिए वे कमरे से बाहर आ गए और भीड़ से कहा 'कल्ल को लेकर मैं किसी से कुछ नहीं कह रहा हूँ, मगर उस आदमी की लाश चाहिए।"

रकिब कमरे से बाहर नहीं आया और वहीं से चिल्लाकर सुनाता रहा, उस आदमी का कल्ल नहीं किया गया है। कहाँ से आएगी उसकी लाश'

"भीड़ में से कोई बोल उठा,

'और कोई कहीं मर ही गया, तो हमें उसकी लाश से क्या लेना देना।'

"मुझे लेना देना है, शेख साहब चीख पड़े, मैं वह लाश उसके घरवालों को सौंप दूंगा और उनसे कहूँगा कि मैं कातिल हूँ और अपने कसूर की सजा पाने आपके पास अकेला आया हूँ। आराम से मरने के लिए मुझे उस आदमी की लाश चाहिए। "लोग हक्का-बक्का हो गए, सिर फिर गया है शेख साहब का "कुछ देर तक गहरी खामोशी छाई रही और तब किसी ने कहा, 'यहाँ मारा नहीं गया है वह, मगर क्या पता, यहाँ से निकलने के बाद कहीं रास्ते में कुछ हो गया हो उसको "रकीब ने अंतिम बार चिल्लाकर कहा 'खुदा कसम, अब्बा, वह आदमी नहीं मारा गया यहाँ" "शेख साहब का तेज ऐसा लुप्त हुआ कि वे निढाल हो ज़मीन पर बैठ गए और घुटनों में सिर डालकर बिलखने लगे।"[7]

कहानी का अंत मानवीय संवेदना को जागृत करने का है। भूतों को साथ लेकर चौकीदार दीपनाथ को खोजने जाता है। वह भूतो को तुरंत वापस भेज देता है और दीपनाथ से कहता है-"मलिनमुख दीपनाथ की ओर देर तक तकते रह जाने के बाद चौकीदार बोला 'शेख साहब इनसान नहीं, कोई पीर - पैगम्बर है। यह पीर आपके लिए रो रहा था और अगर आपको कुछ हो गया रहता तो, तो शायद कब्र में भी इन्हें चैन नहीं मिलता, इनका रोना नहीं रुकता। मैं और भूतो रास्ते भर आपकी कुशलता के लिए भगवन से प्रार्थना करते आए है।" फिर सलज्ज मुस्कराहट के साथ वह बोल गया, "आप उदास मत होइए, मालिक, अगर आपके साथ कुछ भी हो गया रहता तो यहाँ से जाकर वहाँ हम यही सुनाते कि आप सही सलामत घर पहुंच गए हैं।" क्या बोल गया चौकीदार, दीपनाथ की गीली आँखों से आंसू टपकने लगे थे...चौकिदार बोल गया था, "अगर आपके साथ कुछ भी हो गया रहता..." तो

क्या उसके साथ कुछ भी नहीं हुआ है, ...हुआ है, दीपनाथ, वह दीपनाथ.... उसकी इच्छा हुई कि वह चौकीदार से कहे "वह दीपनाथ जिन्दा नहीं है, वह मर गया, उसकी लाश शेख साहब के कमरे में ही कहीं पड़ी होगी। वह उस लाश को दफ़न कर दे...जला दे।"[8]

यह कहानी वस्तुतः सांप्रदायिक तनाव के प्रतिपक्ष में मनुष्यता के स्वर को बुलंद करने वाली कहानी है। यह कहानी संदेश देती है प्रेम का, सद्भाव का और मनुष्यता का। धर्म आस्था का विषय है। धर्म वह है जिसको धारण करने से मनुष्यता निखरे,जीवन सुखमय हो। मानव धर्म सर्वोपरि है। यह कहानी इसी की व्यंजन करती है।

'दुखिया दास कबीर' इनकी एक प्रतिनिधि कहानी है। कहानी के प्रारंभ में नकछेदी दास के अकेलेपन का चित्रण हुआ है- "ऐसी हर डोर टूट चुकी थी जो नकछेदी दास को यह धरती तो क्या अपने गाँव सिमराही तक से बांध कर रखे। कहाँ थी कोई डोर, कोई औलाद नहीं थे उसके, न बेटा न बेटी। पिछले साल घरवाली भी गुजर गई। दूर-पास कोई रिश्तेदार नहीं था, साला बहनोई तक नहीं। गाँव में कोई दोस्त - यार तक नहीं था, जिसके पास दो बड़ी बैठकर मन लगा ले। एक गाय तक नहीं थी उसके पास, तरह प्यार वास, जिसे वह माँ की तरह प्यार करे और जिसके बछड़े को बेटे की तरह दुलार - मलार। पूरे गाँव में एक कुत्ता कता तक नहीं था, जो उसे देखते ही पूंछ हिलाने लगे। उसके घर कोई बिल्ली नहीं आती थी; किसके लिए दूध खरीदकर रखे वह। नितांत अकेला रह गया था वह बूढ़ा, इस दुनिया में।"[9]

कहानी के अंत में वह पीर बाबा के पास जाता है और उनसे अपने लिए कुछ नहीं मांगता। शासक के लिए सद्बुद्धि मांगता है। कहानी का यह अंत है- "पीर बाबा से क्या मांगा नकछेदी ने, सही-सही किसी को नहीं मालूम। एक दिना मास्टर ने ही तीन कोस दूर सिमराही के विद्यालय के मैदान में अखबार पढ़ते हुए स्पष्ट सुनी थी, चेथड़िया पीर को चिथड़ा चढ़ाते नकछेदी दास की बुदबुदाहट, "हे पीर बाबा, इतनी विनती है, कोई राजा कभी पागल न हो।" सिर्फ बुदबुदाहट ही नहीं सुनी दीना मास्टर ने, यह भी देख लिया कि चिथड़े की तरह अपनी आत्मा को लटका दिया नकछेदी दास ने पीपल के गाछ से।"[10]

चन्द्रकिशोर जायसवाल ने सौ से अधिक कहानियाँ लिखी है, और प्रत्येक कहानी का अपना कथ्य है, अपनी संवेदना है। 'नेत्रदान', 'विदाईकाण्ड', 'प्रेत', 'नया जमाना', 'अँधा', 'रिश्ता', 'भोर की ओर', 'पुनरागमन-पर्व', 'नालायक', 'मैं नहि माखन खायो' उनकी अन्य अत्यंत लोकप्रिय कहानियां हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल निःसंदेह अपने समय के जागरुक कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में विषय वैविध्य है और प्रामाणिक जीवनानुभव भी। संवेदना और शिल्प दोनों ही स्टार पर उनकी कहानियाँ पाठकों को रोमांचित करती है। आज के मनुष्य की दुविधा, उनका आत्मसंघर्ष, दुनिया को बेहतर बनाने का सपना, निराशा की आशा का सद्भाव, सांप्रदायिक सद्भाव, लोक जीवन की अभिव्यक्ति उनको अपने समय में एक लोकप्रिय कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

संदर्भ - ग्रंथ सूची :

1. हिन्दी कहानी की दुनिया में चंद्रकिशोर जायसवाल, (भूमिका), प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकलम पेपरबैक, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2023, पृष्ठ -5.
2. वही, पृष्ठ-6.
3. नकबेसर कागा ले भागा, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, पहला संस्करण, 2024, पृष्ठ-11.
4. वही, पृष्ठ-34.
5. वही, पृष्ठ-36.
6. मर गया दीपनाथ, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, पहला संस्करण, 2024, पृष्ठ-10.
7. वही, पृष्ठ-78.
8. वही, पृष्ठ-79.
9. प्रतिनिधि कहानियाँ, चन्द्रकिशोर जायसवाल, पृष्ठ-184-185.
10. वही, पृष्ठ-200.

•